NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

"जैविक पशुपालन: आज की ज़रूरत और कल की समृद्धि"

डॉ. अनिल चौधरी[1], डॉ. सीताराम[2]

विचार:

इस अध्याय में जैविक पशुपालन का एक अवलोकन प्रस्तुत किया गया है जो पशु कल्याण और स्वास्थ्य की अवधारणाओं और जैविक खेती में पशुधन की भूमिका पर बल देता है। यह अध्याय जैविक पशुपालन में जिन आवश्यकताओं पर विचार किया जा सकता है, उनके समूह का भी वर्णन करता है। जैविक खेती में पशुओं के सिद्धांतों, मानकों और प्रबंधन के आधार पर, यह निम्नलिखित प्रश्नों का अनुसरण करता है: (1) पशुधन जैविक कृषि में कैसे मदद करता है? (2) जैविक पशु उत्पादन और पशुओं और पशु उत्पादों के विपणन के लिए हमें किस प्रकार के प्रबंधन कार्यों और प्रमाणन की उम्मीद करनी चाहिए? अध्याय की चर्चा में, यह प्राकृतिक कृषि संसाधनों के उपयोग, पर्यावरण प्रदूषण को कम करने और मानव स्वास्थ्य को बढ़ाने में जैविक पशुपालन के महत्व को भी रेखांकित करता है। हमारे यहां सदियों से खेती और पशुपालन की एकीकृत परंपरा रही है, जो लंबे समय तक प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने पर आधारित थी। हालांकि इस पद्धति से उत्पादन कम होता था, लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सुरक्षित था। वर्तमान में पशुपालन हमारी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और ग्रामीण समुदायों के लिए आजीविका का प्रमुख स्रोत भी है।

वर्तमान में खाद्य सुरक्षा मनुष्य, जाति और पशु जगत के लिए एक अहम विषय है। निरोगी, स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए उपभोक्ताओं को जैविक खाद्य उत्पाद मुहैया करवाना अब हमारी पहली प्राथमिकता में शामिल है। खेती-बाड़ी में कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरक के अंधाधुंध प्रयोग के दुष्परिणाम शारीरिक रुग्णता और जानलेवा बीमारियों के रूप में सामने आ रहे हैं | मृदा स्वास्थ्य भी गड़बड़ा रहा है। इनसे बचने के लिए जैविक खेती के साथ साथ जैविक पशुपालन की ओर जाना समय की मांग है।

हाल के वर्षों में, खेती में यांत्रिकी के बढ़ते उपयोग और पशुपालन उद्योग में रासायनिक पदार्थों के उपयोग से संबंधित उत्पादों के पोषक तत्वों की तुलना में पाया गया है कि जैविक पशुपालन से प्राप्त उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अधिक उपयुक्त हैं। बीजों में आनुवंशिक परिवर्तन, कृत्रिम सुगंध, और रासायनिक रंग संरक्षक के अत्यधिक उपयोग

डॉ. अनिल चौधरी[1], डॉ. सीताराम[2]

[1,2]सहायक आचार्य, श्रीगंगानगर पशु चिकित्सा महाविधालय, टांटिया विश्वविधालय, श्रीगंगानगर (राज.)

से खाद्य सामग्री में हानिकारक प्रभाव दिखने लगे हैं।

आजादी के बाद, खेतों में रासायनिक खाद का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, जिससे प्रारंभ में उत्पादन बढ़ा, लेकिन समय के साथ भूमि की उर्वरता में कमी आई। इसे बढ़ाने के लिए और अधिक रासायनिक खाद का उपयोग किया जाने लगा, जिससे भूमि की उर्वरता में और गिरावट आई। रासायनिक कीटनाशकों के अधिक उपयोग के कारण कई बीमारियों के मामले बढ़ रहे हैं। कृषि में अत्यधिक कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के अनियंत्रित उपयोग के परिणामस्वरूप मानव और पशुओं में शारीरिक दुर्बलता और गंभीर बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। देखा गया है कि कम उम्र में ही लोग कैंसर जैसी घातक बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं। पशुओं के दूध और मांस में भी इन कीटनाशकों के अंश मिलने लगे हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही, हमारी मृदा का स्वास्थ्य भी बिगड़ता जा रहा है।

इन प्रतिकूल प्रभावों से बचने के लिए जैविक खेती के साथ-साथ जैविक पशुपालन की ओर अग्रसर होना समय की मांग है। रासायनिक कीटनाशक रहित उत्पाद ही हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं। जैविक पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे कम लागत में उच्च मूल्य के जैविक पशुधन उत्पाद उत्पन्न कर सकें और कृषि के साथ जुड़े पशुपालन घटक को सशक्त बना सकें।

मुख्य शब्द - जैविक पशुपालन, जैविक पशु उत्पाद, एंटीबायोटिक्स, पर्यावरण संतुलन, खाद्य सुरक्षा

प्रस्तावना: जैविक पशुपालन एक स्थिर प्रणाली नहीं है। यह निरंतर विकास के अधीन है। शुरुआती चरणों में हुई कई गलतियों और भूलों को सहयोग की भावना से, ठीक किया गया है और इस पर काम जारी है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कुछ लोग जैविक खेती की शुरुआत किसी आदर्श छवि के आधार पर करते हैं, न कि कृषि के गहन ज्ञान के साथ। हो सकता है कि पौधों को उगाने के मामले में इससे कोई गंभीर परिणाम न निकलें, लेकिन जब इसका संबंध पशु पालन से होता है, तो परिणाम गंभीर हो सकते हैं। जैविक नियमों में कहीं भी यह उल्लेख नहीं है कि पशु फार्म को कैसे चलाना और उसका प्रबंधन करना है। यह ये भी नहीं कहता है कि पशुओं के लिए यथासंभव प्राकृतिक जीवन सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाए। जैविक पशुपालन वह क्षेत्र है जहां जैविक किसानों के कौशल सबसे महत्वपूर्ण हैं और जिनका सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। वास्तविक प्रकृति इससे कहीं अधिक कठिन है। इस अध्याय में,

हमने मुख्य रूप से जैविक खेती में खेत के जानवरों के उत्पादन सिद्धांतों, प्रसंस्करण और प्रबंधन आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित किया है।

जैविक पशुपालन की परिभाषा: जैविक पशुपालन एक ऐसी प्रणाली है जिसे पशुओं को उनके प्राकृतिक आवास के अनुसार आरामदायक और तनावमुक्त जीवन प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह पशुओं के पोषण, स्वास्थ्य, आवास और प्रजनन के लिए पर्यावरण से प्रमाणित जैविक और जैव निम्नीकरणीय इनपुट के उपयोग को बढ़ावा देता है। साथ ही यह कृत्रिम तत्वों जैसे दवाओं, फीड एडिटिव्स और आनुवंशिक रूप से संशोधित प्रजनन इनपुट के उपयोग से सख्ती से परहेज करता है।

जैविक पशु पालन के उद्देश्य-

जैविक पशु पालन एवं खाद्य सुरक्षा मनुष्य जाति और पशु जगत के लिये वर्तमान में प्रासंगिक विषय है। जैविक खाद्य की उपलब्धता मानव जाति के निरोगी स्वास्थ्य और सुखी जीवन के लिये हमारी प्राथमिकता में शामिल है।

1. जैविक पशुधन उत्पाद में डेयरी के उत्पाद, मांस, अंडा जैसे खाद्य पदार्थों का पर्याप्त मात्रा में और अधिक गुणवता में उत्पादन करना।
2. जैविक खेती अपनाकर भूमि की उर्वरकता को बचाए रख कर भूमि की इस उर्वरकता को लम्बे समय के लिये बनाये रखना।
3. पशुपालन, कृषि व पर्यावरण के बीच जैविक प्राकृतिक चक्र बना कर संतुलन स्थापित करना और प्रकृति को प्रदूषण मुक्त करना: इसका मतलब है कि जानवर फसलों और खेती के उप-उत्पादों को खाते हैं। जानवरों का मल, गोबर के रूप में खाद बनता है और फिर मिट्टी में वापस चला जाता है, जिससे खेती के कारण खो चुके पोषक तत्वों की भरपाई होती है। यह पारिस्थितिकी तंत्र में पोषक तत्वों के चक्र को पूरा करता है।
4. कृषि व जैव विविधता का संरक्षण करना व उनके बीच संतुलन स्थापित करना: खेत में जितने अधिक प्रकार के मवेशी होंगे, घरेलू स्तर पर उतने ही विभिन्न पोषक तत्व मिलेंगे। उदाहरण के लिए, खरगोशों और मुर्गियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इनसे होने वाली आय सीधे वंचित वर्गों, जैसे महिलाओं और बच्चों तक पहुँचती है। इनका गोबर नाइट्रोजन से भरपूर होता है, जिसका उपयोग रसोई के बगीचों में सब्जियों के उत्पादन को बढ़ाने और

इस प्रकार परिवार के आहार को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है।

5. जैविक पशु पालन अपनाकर मानव स्वास्थ्य व अन्य प्राणियों की रक्षा करना।
6. जीन विविधता का संरक्षण और पशुओं को उनके प्राकृतिक स्वभाव में प्रकट होने देना: उदाहरण के लिए, मुर्गियों को रात में ऊंचे स्थान पर बैठना पसंद होता है, इसलिए उन्हें बैठने के लिए रेलिंग प्रदान की जानी चाहिए। उन्हें गहरी बिछावट प्रणाली में भी पाला जाना चाहिए, जो उन्हें चींटियों और कीड़ों को खोदने और धूल में स्नान करने की अनुमति देता है। अंडे देने के लिए उन्हें अंधेरे और एकांत वाले घोंसले उपलब्ध कराएं। बकरियां प्राकृतिक रूप से ऊंचे स्थानों से पत्तियां खाना पसंद करती हैं, इसलिए उनके चारे को इतनी ऊंचाई पर लटकाना चाहिए कि वे सीधे खड़े होकर खा सकें।
7. जैविक अपघटक व पुर्नचक्रित पदार्थों के उपयोग को बढ़ावा देना।
8. जल व मृदा संरक्षण को प्रोत्साहित करना।
9. जैविक पशु पालन को अपनाने के लिये पशु पालकों को प्रोत्साहित कर अधिक से अधिक लाभ पहुँचाना।
10. कम बाहरी संसाधनों का उपयोग: इससे उत्पादन लागत कम हो जाती है और एक स्थायी उत्पादन प्रणाली का निर्माण होता है क्योंकि अधिकांश सामग्री खेत में ही पुन: प्राप्त की जा सकती हैं या स्थानीय रूप से उपलब्ध होती हैं।

जैविक पशु पालन के लाभ-

1. जैविक पशुपालन,वातावरण को प्रदूषण रहित बनाये रखने एवं मानव स्वास्थ्य की रक्षा करता है।
2. जैविक पशु पालन से प्राप्त उत्पाद एंटीबायोटिक्स एवं हॉर्मोन से पूर्णतः मुक्त होते हैं। अतः इनके सेवन से मनुष्य एवं अन्य प्राणियों को कई घातक बीमारियों से बचाया जा सकता है। जैसे हृदय रोग,कैंसर, मधुमेह आदि।
3. मृदा की उर्वरकता को लम्बे समय तक बनाये रखता है।
4. जैविक पशुपालन प्राकृतिक संसाधनों के उपयुक्त उपयोग को सुनिश्चित करता है ताकि कम लागत से अधिक मात्रा व उच्च गुणवत्ता वाले

पशु आधारित भोज्य पदार्थों का उत्पादन हो सके।

5. जैविक पशुपालन से प्राप्त खाद्य पदार्थ का मूल्य सामान्य खाद्य पदार्थों से अधिक होता है,इससे पशु पालक को अधिक आमदनी होने से उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।
6. यह पारंपरिक पशुपालन को बढ़ावा देता है ताकि किसानों को कम लागत में अधिक मूल्य वाले जैविक पशु उत्पाद प्राप्त हो सकें।

जैविक पशुपालन : क्या करें?

1. पशुओं को रासायनिक खाद रहित पूर्णतः जैविक चारा खिलायें जिसका उत्पादन जैविक बीजों एवं जैविक पद्धति से किया गया हो।
2. बरसात के मौसम में जल हरे चारे का उत्पादन जब अधिक हो तो उसे हे व साइलेज के रूप में संरक्षित किया जा सकता है ताकि पशुओं को वर्ष भर जैविक चारा प्राप्त हो सके। इसमें अजोला पशु आहार भी शामिल किया जा सकता है।
3. पशुओं का प्रबंधन अच्छी तरह से करें ताकि वे लगातार स्वस्थ रहें व कम से कम बीमार पड़ें।
4. पशुओं के बीमार होने की स्थिति में पारंपरिक देशी इलाज, आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक दवाइयों से इलाज को प्राथमिकता दें।
5. फार्म का प्रमाणीकरण अधिकृत जैविक एजेंसी से करवाया जाए। जैविक पशुधन फार्म को सामान्य फार्म से पृथक रख कर पशुओं के लिए प्राकृतिक चारागाह की व्यवस्था करें और छायादार वृक्ष लगाए ताकि उनका पालन पोषण प्राकृतिक वातावरण में हो सके।
6. फार्म की साफ सफाई नियमित तौर पर जैविक व रासायनिक कीटनाशक रहित जैसे नीम, तुलसी इत्यादि का उपयोग कर पारंपरिक देसी विधियों से करें।
7. जमीन की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए जैविक खाद जैसे कि वर्मी कंपोस्ट, केंचुआ खाद व फार्म के बचे हुए जैविक अपघटक का उपयोग करें साथ ही जैविक तरीके से प्राप्त पशु उत्पादों को अन्य पशु उत्पादन से अलग रखें तथा इनमें किसी भी प्रकार का प्रसंस्कृत संश्लेषित फीड एडिटिव और रासायनिक संरक्षक ना मिले।
8. पशु उत्पादों की प्रोसेसिंग भी उन्नत देसी तकनीक का उपयोग करते हुए जैविक तरीके से करें ।

9. जैविक पशु उत्पादों का प्रमाणीकरण किसी प्रमाणित एजेंसी से करवाए ताकि इन उत्पादों में जैविक उत्पाद का टैग लगाया जा सके तथा इनका उचित दाम निर्धारित हो सके।

जैविक पशुपालन क्या नहीं करें-

1. चारा उत्पादन के लिए जेनेटिकली मोडिफाइड बीजों का इस्तेमाल बिलकुल न करें।
2. जमीन की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों का उपयोग बिलकुल न करें।
3. पशुओं का उपचार के लिए एंटीबायोटिक व एलोपैथिक दवाइयों का इस्तेमाल न करें।
4. जेनेटिकली मोडिफाइड वैक्सीन के प्रयोग से बचें।
5. कीटों के नियंत्रण के लिए संश्लेषित केमिकल कीटनाशकों का उपयोग न करते हुए नीम तुलसी जैसे आयुर्वेदिक ऐंटीबायोटिक का उपयोग सुनिश्चित करें।
6. खरपतवार को नष्ट करने के लिए संश्लेषित खरपतवार नाशक का उपयोग न करें।